

श्रीमद्भागवतम् स्कन्ध 10 अध्याय 68 — साम्ब का विवाह

5 October 2026



जब अभिमानी कौरव किशोर साम्ब को बन्दी बना लेते हैं और यादवों को मुकुटधारी मस्तक पर चढ़ने की धृष्टता करने वाली जूती कहकर उपहास करते हैं, तब बलराम अपना हल हस्तिनापुर के नीचे लगाकर समूची नगरी को गंगा की ओर खींचने लगते हैं।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

श्रीमद्भागवतम् विज्ञम में पुनः स्वागत है — श्रीमद्भागवत महापुराण की पवित्र कथाओं और शिक्षाओं की हमारी भक्तिमयी यात्रा। दशम स्कन्ध के इस अड़सठवें अध्याय में शुकदेवजी राजा परीक्षित को सुनाते हैं कि कैसे एक विवाह भगवान बलराम की सबसे विस्मयकारी लीलाओं में से एक का निमित्त बन गया — जब केवल सन्धि कराने आए प्रभु का उत्तर तिरस्कार से दिया गया।

अध्याय-परिचय

- शास्त्र: श्रीमद्भागवत महापुराण
- स्कन्ध: 10 (दशम स्कन्ध, उत्तरार्ध)
- अध्याय: 68 (अष्टषष्टितम अध्याय)

- अध्याय शीर्षक: साम्ब का विवाह
- मुख्य वक्ता: श्री शुकदेव गोस्वामी (राजा परीक्षित को सुनाते हुए)
- मुख्य श्रोता: राजा परीक्षित
- मुख्य स्थल: गंगा-तट पर कुरुओं की राजधानी हस्तिनापुर (गजाह्वय); और द्वारका
- केंद्रीय विषय: साम्ब द्वारा लक्ष्मणा का हरण और उसका बन्दी होना; बलराम का शान्ति-प्रयास और कौरवों का अपमान; हस्तिनापुर का खींचा जाना; कौरवों की शरणागति; द्वारका लौटना
- मुख्य श्लोक-सीमा: स्कन्ध 10, अध्याय 68, श्लोक 1-54
- मूल संस्करण: गीता प्रेस श्रीमद्भागवत महापुराण (अंग्रेज़ी, दशम स्कन्ध)

पूर्व अध्याय का संदर्भ

सड़सठवें अध्याय में भगवान बलराम ने देश को उजाड़ने वाले महाबली वानर द्विविद का वध किया और प्रशंसा के बीच द्वारका लौटे। अब शुकदेवजी प्रभु के युद्ध-पराक्रम से उनके धैर्य की ओर मुड़ते हैं — और उसकी सीमा की ओर भी।

साम्ब लक्ष्मणा को हर ले गए

शुकदेवजी ने कहा: परीक्षित, श्रीकृष्ण और जाम्बवती के पुत्र साम्ब युद्ध में सदा विजयी रहने वाले वीर थे। दुर्योधन की पुत्री लक्ष्मणा के स्वयंवर में राजाओं की सभा जुटी थी, जिससे राजकुमारी स्वयं अपना वर चुन सके; और उसी सभा के बीच से साम्ब उसे हर ले गए।

कौरव क्रोध से जल उठे। वे बोले, “इस उद्दण्ड बालक ने हमारी अवहेलना की है। जिस कन्या ने उसे चाहा तक नहीं, उसे यह बलपूर्वक ले गया। इस अविनीत को बाँध लो। वृष्णि क्या कर लेंगे? वे हमारी दी हुई भूमि पर राज्य करते हैं, जो हमारी ही कृपा से फली-फूली है। यदि पुत्र के बन्दी होने की बात सुनकर वे यहाँ आने का साहस करें, तो उनका दर्प टूट जाएगा और वे वैसे ही शान्त हो जाएँगे जैसे भली-भाँति संयमित इन्द्रियाँ।” कुरुवृद्धों की सम्मति से कर्ण, शल, भूरिश्रवा, यज्ञकेतु और दुर्योधन उसे पकड़ने निकल पड़े।



स्वयंवर की सभा के बीच से श्रीकृष्ण और जाम्बवती के पुत्र साम्ब दुर्योधन की पुत्री लक्ष्मणा को अपने रथ में हर ले जाते हैं (श्लोक 1-5)।

छह रथों के सामने अकेला सिंह

धृतराष्ट्र के पुत्रों को पीछा करते देख महारथी साम्ब ने अपना सुन्दर धनुष उठाया और सिंह की भाँति अकेले उनके सामने खड़े हो गए। कर्ण के नेतृत्व में कुरु धनुर्धर “ठहर! ठहर!” पुकारते हुए उन पर टूट पड़े और उन्हें बाणों से ढक दिया। बालक होते हुए भी साम्ब अचिन्त्य-शक्ति प्रभु के पुत्र थे, और इस अन्यायपूर्ण आक्रमण को वे वैसे ही सह न सके जैसे सिंह क्षुद्र पशुओं की छेड़छाड़ नहीं सहता।

धनुष की टंकार करते हुए उन्होंने छहों रथियों को एक साथ छह-छह बाणों से बींध दिया: चार घोड़ों के लिए, एक सारथि के लिए, एक स्वयं योद्धा के लिए। शत्रुओं ने भी इस पराक्रम की सराहना की। किन्तु फिर छहों ने मिलकर उन पर प्रहार किया: चार ने उनके घोड़े मार डाले, एक ने सारथि को मारा और एक ने धनुष काट दिया। उन्हें रथहीन करके कौरवों ने बड़ी कठिनाई से साम्ब को बाँधा और उस किशोर राजकुमार तथा अपनी राजकुमारी को लेकर विजयी होकर अपनी नगरी में प्रवेश किया।



छह कुरु रथों के सामने अकेले साम्ब सिंह की तरह लड़ते हैं, जब तक वे उनके घोड़े, सारथि और धनुष छीनकर उन्हें बड़ी कठिनाई से बाँध नहीं लेते (श्लोक 6-12)।

बलराम ने शान्ति का मार्ग चुना

देवर्षि नारद से यह समाचार सुनकर यादवों का क्रोध भड़क उठा, और राजा उग्रसेन की आज्ञा से वे कौरवों पर चढ़ाई की तैयारी करने लगे। किन्तु कलियुग के मल को हरने वाले भगवान बलराम कुरुओं और यादवों के बीच युद्ध नहीं चाहते थे। युद्ध के लिए सन्नद्ध वृष्णि-वीरों को उन्होंने धीरे से शान्त किया और सूर्य-सम तेजस्वी रथ पर स्वयं हस्तिनापुर की ओर चल पड़े — ब्राह्मणों और कुलवृद्धों से घिरे हुए, जैसे ग्रहों के बीच चन्द्रमा।

नगर के बाहर एक उपवन में ठहरकर बलराम ने कौरवों का मन जानने के लिए उद्धव को धृतराष्ट्र के पास भेजा। उद्धव ने धृतराष्ट्र, भीष्म, द्रोण, बाह्लीक और दुर्योधन को विधिवत् प्रणाम कर प्रभु के आगमन की सूचना दी। अपने परम सुहृद् के आने का समाचार पाकर कौरव अत्यन्त प्रसन्न हुए; उद्धव का सत्कार कर वे हाथों में मंगल-द्रव्य लिए बलराम की अगवानी को निकले, और गौ तथा अर्घ्य अर्पित कर यथाविधि उनका स्वागत किया; जो उनका प्रभाव जानते थे, उन्होंने सिर झुकाकर प्रणाम किया।



ब्राह्मणों और वृद्धों सहित शान्ति की खोज में आए बलराम का सम्मान करने कुरुवृद्ध मंगल-द्रव्य लेकर हस्तिनापुर से बाहर आते हैं (श्लोक 13-19)।

परस्पर कुशल-क्षेम पूछ लेने पर बलराम ने निर्भीक वाणी में कहा, “पृथ्वी के राजाओं के भी स्वामी राजा उग्रसेन ने जो आज्ञा दी है, उसे सावधान होकर सुनो और बिना विलम्ब पालन करो। वे कहते हैं: तुम अनेक थे, और धर्मपूर्वक युद्ध करने वाले एक अकेले वीर को तुमने अधर्म से जीतकर बाँध लिया। बन्धुओं में एकता बनी रहे, इसलिए मैंने यह सह लिया है।” सन्देश में केवल इतना माँगा गया था कि साम्ब अपनी नवविवाहिता पत्नी सहित घर लौट आएँ।

कौरवों का अहंकारी उत्तर

बलराम के वीरता-भरे, उनकी शक्ति के अनुरूप वचन सुनकर कौरव भड़क उठे और बोले, “अहो, कैसा महान् आश्चर्य है! काल की दुर्लभ गति से अब जूती उस मस्तक पर चढ़ना चाहती है जो मुकुट धारण करता है।”

अहो महच्चित्रमिदं कालगत्या दुरत्यया ।

आरुरुक्षत्युपानद् वै शिरो मुकुटसेवितम् ॥ २४ ॥

aho mahac citram idam kāla-gatyā duratyayā ārurukṣaty upānad vai śiro mukuṭa-sevitam

अर्थ: ओह, कितनी विचित्र बात है! समय की अटल चाल के कारण एक जूता अब उसी सिर पर आरूढ़ होने का प्रयत्न कर रहा है जो राजमुकुट से सुशोभित है। (स्कन्ध 10, अध्याय 68, श्लोक 24)

वे आगे बोले, “ये वृष्णि विवाह-सम्बन्ध से हमसे जुड़े हैं, हमारी शय्या, आसन और भोजन में साझीदार हैं; हमने इन्हें राजसिंहासन दिया और इस प्रकार अपनी बराबरी पर बिठाया। चँवर और पंखा, शंख, श्वेत छत्र, किरीट, सिंहासन और राजशय्या — इन सबका उपभोग ये केवल हमारी उपेक्षा के कारण करते हैं। यादवों के लिए राजचिह्न बहुत हो चुके! ये उपहार देने वाले के ही विरुद्ध हो गए हैं, जैसे सर्पों को पिलाया गया अमृत। हमारी कृपा से बढ़े हुए ये निर्लज्ज होकर अब हमें आज्ञा देने चले हैं। भीष्म, द्रोण, अर्जुन आदि ने जो नहीं दिया, उसे इन्द्र भी कैसे भोगे — क्या भेड़ सिंह का शिकार छीन सकती है?”

बलराम का रोष

जन्म, बन्धु-बल और सम्पत्ति के मद में फूले कौरव शिष्टाचार त्यागकर, बलराम को ये असह्य वचन सुनाकर, अपनी नगरी में लौट गए। अच्युत बलराम ने उनकी दुःशीलता देखी थी और उनके कटु वचन सुने थे। क्रोध से भरे, देखने में भयंकर, रोष में बार-बार हँसते हुए उन्होंने घोषणा की कि ऐसे लोगों के लिए अब एक ही उपाय शेष है — दण्ड।

नूनं नानामदोन्नद्धाः शान्तिं नेच्छन्त्यसाधवः ।

तेषां हि प्रशमो दण्डः पशूनां लगुडो यथा ॥ ३१ ॥

nūnaṁ nānā-madonnaddhāḥ śāntiṁ necchanty asādhavaḥ teṣāṁ hi praśamo daṇḍaḥ paśūnāṁ laguḍo yathā

अर्थ: निश्चय ही अनेक प्रकार के मद से उन्मत्त दुर्जन सन्धि की इच्छा नहीं करते; उन्हें शान्त करने का साधन केवल दण्ड है, जैसे पशुओं के लिए लाठी। (स्कन्ध 10, अध्याय 68, श्लोक 31)

“क्षुब्ध यादवों को और स्वयं कुपित श्रीकृष्ण को धीरे-धीरे शान्त करके मैं यहाँ शान्ति की इच्छा से आया था। किन्तु इन मन्दबुद्धि, कलहप्रिय दुष्टों ने मेरा तिरस्कार किया और अभिमान में मुझे बार-बार कटु वचन कहे। तो उग्रसेन — जिनकी आज्ञा इन्द्र और लोकपाल तक मानते हैं — सम्राट नहीं, केवल भोज, वृष्णि और अन्धकों के एक सरदार हैं! सुधर्मा सभा में विराजने वाले और स्वर्ग से कल्पवृक्ष पारिजात लाने वाले श्रीकृष्ण राजसिंहासन के योग्य नहीं! जिनके चरणों की स्वयं लक्ष्मी उपासना करती हैं, वे राजोचित वैभव के अधिकारी नहीं!”

यस्याङ्घ्रिपङ्कजरजोऽखिललोकपालैर्मौल्युत्तमैर्धृतमुपासिततीर्थतीर्थम् ।

ब्रह्मा भवोऽहमपि यस्य कलाः कलायाः श्रीश्चोद्धहेम चिरमस्य नृपासनं क्व ॥ ३७ ॥

yasyāṅghri-pankaja-rajo 'khila-loka-pālair mauly-uttamair dhṛtam upāsita-tīrtha-tīrtham brahmā bhavo 'ham api yasya kalāḥ kalāyāḥ śrīś codvahoma ciram asya nṛpāsanaṁ kva

अर्थ: जिनके चरणकमल की धूलि साधुजनों द्वारा सेवित तीर्थों को भी तीर्थत्व देती है और जिसे समस्त लोकपाल अपने श्रेष्ठ मुकुटों पर धारण करते हैं; जिनकी कला की भी कला ब्रह्मा, शिव, लक्ष्मी और मैं स्वयं उस धूलि को सदा से वहन करते आए हैं — उनके लिए राजसिंहासन का क्या मूल्य? (स्कन्ध 10, अध्याय 68, श्लोक 37)

क्रोध की इस ज्वाला में बलराम उस सत्य को कह देते हैं जिस पर समूचा अध्याय टिका है। कौरव समझते हैं कि राजत्व उनका दिया हुआ अनुग्रह है जिसे वे वापस ले सकते हैं; परन्तु सत्ता का हर चिह्न केवल उन परमेश्वर की कृपा से है जिनकी चरण-धूलि को ब्रह्मा, शिव और लक्ष्मी मस्तक पर धारण करते हैं। पद, भूमि और सम्मान देना कभी हमारे वश में नहीं — ये सब उन्हीं के हैं, सबको समान रूप से उधार दिए गए — और स्वयं को “दाता” मानना ही वह भ्रम है जिसे यह अध्याय उधाड़ता है। इसीलिए उनका व्यंग्य इतना तीखा है: “तो यादव कौरवों की दी हुई भूमि का टुकड़ा भोगते हैं! हम जूती हैं, और कौरव मस्तक! जिसमें इन्हें दण्ड देने की शक्ति है, वह ऐश्वर्य के मद में पागलों की तरह बकते इन लोगों के प्रलाप को कैसे सहे?”

गंगा को ओर खींचा गया हास्तेनापुर

“आज मैं पृथ्वी को कौरव-रहित कर दूँगा!” यह कहकर बलराम रोष में उठ खड़े हुए और उन्होंने अपना हल थाम लिया, मानो तीनों लोकों को भस्म कर देंगे।

लाङ्गलाग्रेण नगरमुद्विदार्य गजाह्वयम् ।

विचकर्ष स गङ्गायां प्रहरिष्यन्नमर्षितः ॥ ४१ ॥

lāṅgalāgreṇa nagaram udvidārya gajāhvayam vicakarṣa sa gaṅgāyāṁ prahariṣyann amarṣitaḥ

अर्थ: हल की नोक से उन्होंने गजाह्वय नगर को उखाड़ लिया और उसे गंगा में फेंक देने के विचार से क्रोधित प्रभु उसे घसीटने लगे। (स्कन्ध 10, अध्याय 68, श्लोक 41)

हास्तिनापुर जल में डोलती नौका की भाँति डगमगाने लगा। अपनी नगरी को नदी की ओर खिसकते देख कौरव घबरा उठे। प्राण बचाने की इच्छा से वे अपने परिवारों को साथ लेकर, साम्ब और लक्ष्मणा को आगे करके, हाथ जोड़े सर्वशक्तिमान बलराम की शरण में आए।



जल पर नौका की तरह डोलती अपनी नगरी देखकर भयभीत कौरव साम्ब और लक्ष्मणा को आगे कर बलराम के चरणों में शरण माँगते हैं (श्लोक 42-48)।

कौरवों की स्तुति

वे पुकार उठे, “हे राम! हे राम! हे सबके आधार! हम आपका प्रभाव नहीं जानते थे। हम मूढ़ों, कुबुद्धियों का अपराध क्षमा कीजिए। किसी के आश्रय के बिना स्थित आप अकेले ही जगत् की उत्पत्ति, स्थिति और लय के कारण हैं; ज्ञानी कहते हैं कि लोक आपके खिलौने हैं और आप खेलने वाले। हे अनन्त बल वाले सहस्रशीर्ष! आप अनायास ही इस भूमण्डल को अपने एक सिर पर धारण करते हैं, और अन्त में समस्त विश्व को अपने में समेटकर अकेले शेष रह जाते हैं।” फिर उन्होंने बात का मर्म कहा।

कोपस्तेऽखिलशिक्षार्थं न द्वेषान्न च मत्सरात् ।

बिभ्रतो भगवन् सत्त्वं स्थितिपालनतत्परः ॥ ४७ ॥

kopas te 'khila-śikṣārthaṁ na dveṣān na ca matsarāt bibhrato bhagavan sattvaṁ sthiti-pālana-tatparaḥ

अर्थ: हे भगवन्, शुद्ध सत्त्व को धारण करने वाले और जगत् की स्थिति की रक्षा में तत्पर आपका क्रोध सबको शिक्षा देने के लिए होता है — न द्वेष से, न मत्सर से। (स्कन्ध 10, अध्याय 68, श्लोक 47)

“हे सर्वभूतात्मा, हे सर्वशक्तिधर, हे अव्यय, हे विश्वकर्मा, आपको नमस्कार है। आपको बार-बार नमस्कार; हम आपकी शरण में आए हैं।”

बलराम की कृपा और घर-वापसी

काँपती नगरी के बीच भयभीत होकर शरण में आए कौरवों से इस प्रकार प्रसन्न किए जाने पर बलराम अत्यन्त सुप्रसन्न हुए। “डरो मत,” कहकर उन्होंने उन्हें अभय दिया। पुत्री-वत्सल दुर्योधन ने विवाह के उपहार में साठ-साठ वर्ष के बारह सौ हाथी, दस हज़ार घोड़े, सूर्य-सम चमकते छह हज़ार स्वर्ण-रथ और स्वर्ण-हार पहने एक हज़ार दासियाँ दीं। बलराम ने यह सब स्वीकार किया और सुहृदों के अभिनन्दन के बीच अपने भतीजे और वधू सहित विदा हुए। द्वारका पहुँचकर हलधर अपने अनुरागी बन्धुओं से मिले और यदु-श्रेष्ठों की सभा में कुरुओं के बीच किया गया अपना सारा कार्य कह सुनाया।



साम्ब और वधू सहित द्वारका लौटकर बलराम एकत्र यदु-श्रेष्ठों को कुरुओं के बीच घटी सारी बात सुनाते हैं (श्लोक 52-54)।

अद्यापि च पुरं ह्येतत् सूचयद् रामविक्रमम् ।

समुन्नतं दक्षिणतो गङ्गायामनुदृश्यते ॥ ५४ ॥

adyāpi ca puram hy etat sūcayad rāma-vikramam samunnataṁ dakṣiṇato gaṅgāyām anudṛśyate

अर्थ: आज भी यह नगर दक्षिण की ओर ऊँचा उठा हुआ और गंगा की ओर ढलता हुआ दिखाई देता है, जो बलराम के पराक्रम की सूचना देता है।
(स्कन्ध 10, अध्याय 68, श्लोक 54)

इस अध्याय की प्रमुख शिक्षाएँ

1. जन्म, बन्धु और धन का अभिमान हृदय को अन्धा कर देता है। शुकदेवजी ठीक-ठीक बताते हैं कि कौरवों को किसने फुलाया था: कुल, बलशाली सम्बन्धी और सम्पत्ति। जिस पर भी हमें गर्व है, वही हमें सामने खड़े प्रभु को पहचानने से रोक सकता है।
2. शान्ति सदा प्रभु का पहला प्रस्ताव है। बलराम ने चढ़ाई को तैयार सेना को शान्त किया और सैनिकों के बजाय ब्राह्मणों और वृद्धों के साथ यात्रा की। भक्त सबसे पहले धैर्य को उदारता से खर्च करता है।
3. जो शान्ति ठुकराते हैं, उनके लिए दण्ड ही करुणा है। प्रभु का दण्ड उनकी कृपा का विलोम नहीं, उसका अन्तिम और गम्भीरतम रूप है।
4. समस्त प्रभुता प्रभु से उधार ली हुई है। कोई भी सचमुच राज्य “देता” नहीं; हम केवल वही थामे हैं जो उनका है।
5. शरणागति प्रभु के दण्ड को आश्रय में बदल देती है। उनका क्रोध जगत् की चिन्ता से उपजता है, घृणा से नहीं; जिस क्षण कौरव शरण में आते हैं, वह “डरो मत” बन जाता है।

एक भक्तिमय चिन्तन

इस अध्याय की गहरी गति उसके नाटक से कहीं शान्त है। प्रभु अतिथि बनकर आए, मधुर वचन बोले, एक बालक की मुक्ति माँगी — और जब शान्ति का हर द्वार बन्द कर दिया गया, तभी उन्होंने हल उठाया। तब भी उनके क्रोध ने विनाश नहीं किया। नगरी झुकी, कोई मरा नहीं, और कौरवों को ठीक उतना ही भय मिला जितना यह पहचानने के लिए चाहिए था कि उनके सामने कौन खड़ा है। हमारे जीवन के कठिन मोड़ कितनी बार ठीक यही होते हैं: धरती डोलती रहती है जब तक हम हाथ नहीं जोड़ लेते। माँगते ही बलराम ने अभय दे दिया; वे इसे आरम्भ से ही देना चाहते थे। हस्तिनापुर का ढलान इस बात का चिह्न बना रहता है कि एक अभिमानी नगरी को अपने चरणों तक लाने में उन्हें कितना कम बल लगा, और उसके आते ही उन्होंने कितनी शीघ्र क्षमा कर दिया।

एक दैनिक भक्ति-अभ्यास

आज एक ऐसी जगह पहचानिए जहाँ आप “मस्तक” पर खड़े रहे हैं — जन्म, पद या सम्पत्ति का कोई ऐसा लाभ जो चुपचाप आपसे किसी दूसरे को नीचा दिखवाता है। उसे एक छोटी-सी प्रार्थना में प्रभु को लौटा दीजिए, यह स्मरण करते हुए कि देवताओं में श्रेष्ठ भी किसकी चरण-धूलि अपने मुकुटों पर धारण करते हैं। फिर, यदि आपके जीवन में कोई कलह सुलग रहा हो, तो बलराम का पहला मार्ग अपनाइए और सबसे पहले शान्ति का प्रस्ताव दीजिए। आरम्भ में धीरे-धीरे जपें: ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

उपसंहार

दशम स्कन्ध का यह अड़सठवाँ अध्याय एक स्वयंवर से नदी पर लटकती एक नगरी तक जाता है, और उसकी एकमात्र शिक्षा यह है कि हमारा हर सम्मान प्रभु से उधार लिया हुआ है। कौरवों ने उनकी कृपा को अपनी उदारता समझ लिया; बलराम ने अन्त तक शान्ति का प्रस्ताव रखा, शान्ति ठुकराए जाने पर ही दण्ड दिया, और माँगते ही क्षमा कर दिया। हम कभी प्रभु की उधार दी हुई वस्तु को अपनी दी हुई न समझें, और हल उठने से पहले ही हाथ जोड़ लें।

श्रीमद्भागवतम् का दिव्य ज्ञान हमारे हृदयों में शुद्ध भक्ति जगाए।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

जय श्री माधव।

संदर्भ एवं आभार

- मूल संस्करण: गीता प्रेस, श्रीमद्भागवत महापुराण (अंग्रेज़ी), दशम स्कन्ध (उत्तरार्ध), अध्याय 68।
- श्रृंखला: श्रीमद्भागवतम् विज़डम • बिस्व सनातन धर्म सेवा ट्रस्ट।
- पण्डित डॉ. श्री काशीनाथ मिश्र के आध्यात्मिक मार्गदर्शन एवं अनुशंसा के अनुसार प्रस्तुत।

यह लेखक के अपने शब्दों में एक मौलिक, श्रद्धापूर्ण पुनर्कथन है, जिसमें संक्षिप्त उद्धृत श्लोक देवनागरी एवं लिप्यन्तरण सहित दिए गए हैं और उनके अर्थ सारांश रूप में प्रस्तुत हैं। यह किसी एक प्रकाशक के सतत अनुवाद या टीका का पुनरुत्पादन नहीं है। किसी प्रकाशक के संबंध या समर्थन का दावा नहीं किया गया है।

॥ हरि ॐ तत्सत् ॥

जय श्री माधव

ऑनलाइन पढ़ें: kalkiabatara.org/hi/blog-srimad-bhagavatam-canto-10-chapter-68-the-marriage-of-samba-hi.html

श्रीमद्भागवतम् विज़डम • कल्कि अवतार इंटरनेशनल • बिस्व सनातन धर्म सेवा ट्रस्ट